कालजयी चिंतन : कविता की शैली में......

जो सिरफिरे होते हैं, वही इतिहास लिखते हैं समझदार लोग, तो सिफ उनके बारे में पढ़ते हैं।

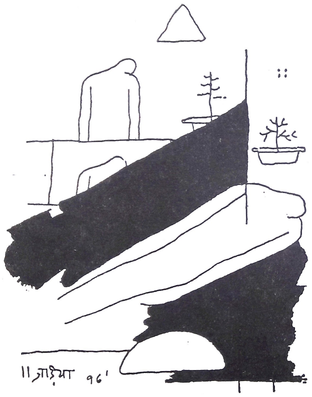

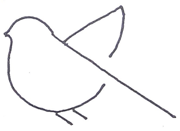

■ यही ज़ज्बा रहा तो
मुश्किलों का हल भी निकलेगा
ज़मी बंजर हुई तो क्या
वहीं से जल भी निकलेगा।

■ बारिश की बूँदें भले ही छोटी हों
लेकिन उनका लगातार बरसना,
बड़ी नदियों का बहाव बन जाता है।
वैसे ही हमारे छोटे-छोटे प्रयासों से ही
...एक दिन परिवर्तन आता है।

■ **ना हो मायूस, ना घबरा,
अंधेरे में मेरे साथी
इन्हीं रातों के दायमन से
सुनहरा कल भी निकलेगा।**

■ रास्ते कभी खत्म नहीं होते,
बस। लोग हिम्मत हार जाते हैं....

■ **अध्यापक और ज़िंदगी में इतना ही फर्क है कि
अध्यापक सबक सिखाकर इम्तिहान लेता है
...और ज़िंदगी
इम्तिहान लेकर, सबक सिखाती है।**

■ इसलिए...
बीते समय के लिए मत रोइए, वो चला गया।
भविष्य की चिंता छोड़ो, वो अभी आया ही नहीं।
वर्तमान को जिओ, इसे सुंदर बनाओ, यही सच है।
जब निट्ठले बैठे हों - खूब घड़ी देखो
जब काम करो तो घड़ी मत देखो
जो पसंद है - उसे हासिल करो।
नहीं तो - जो हासिल है, उसे पसंद करो।

■ असल सच और सार तो यही है कि
...हम सभी, एक सफर में ही हैं। अब यह हम पर है
...कि हम कौन सा रास्ता चुनते हैं। खुशियाँ बटोरने का...
या खुशियाँ बांटने का।

■ **जो सिरफिरे होते हैं, वही इतिहास लिखते हैं
समझदार लोग, तो सिफ उनके बारे में पढ़ते हैं।**

■ सारे सबक किताबों में नहीं मिलते,
कुछ सबक ज़िंदगी सिखाती है....

■ **ज़िंदगी में रिस्क (जोखिम) लेने से डरो मत या
तो जीत मिलेगी, या हारे तो सीख मिलेगी...**

■ सभी जीवों में केवल इंसान ही पैसा कमाता है...
कितनी अजीब बात है कि - कोई जीव भूखा नहीं मरता
और इंसान का कभी पेट नहीं भरता....

■ सफल लोग रास्ते बदलते हैं, इरादे नहीं
और असफल लोग अपने इरादे बदल देते हैं...
संस्कारों से बड़ी कोई वसीयत नहीं होती...
और ईमान से बड़ी, कोई विरासत नहीं होती....।

■ ज़िंदगी में तपिश कितनी भी हो, कभी हताश न होना
क्योंकि, धूप कितनी भी तेज हो, समंदर कभी नहीं सूखते।

■ यदि अंधकार से लड़ने का संकल्प कोई कर लेता है,
तो एक अकेला जुगनू भी, सब अंधकार हर लेता है।

■ **ज़िंदगी में कठिनाइयों का आना तय है, उदास न होना,
'कठिन रोल' सिर्फ 'योग्य एक्टर' को दिए जाते हैं...**

■ हीरे को परखना है, तो अंधेरे का इंतज़ार करो,
धूप में तो काँच के टुकड़े भी चमकने लगते हैं।

■ **बिना संघर्ष के कोई महान नहीं बनता।
पत्थर पर जब तक चोट न पड़े, भगवान नहीं बनता।**

चिंतन :

राजेन्द्र माथुर

कुर्बानी और आर्थिक ब्रह्मचर्य आज देश के वातावरण में ही नहीं है और इसका मुख्य दोष कांग्रेस के नेताओं का है, जिन्होंने 1947 के तुरन्त बाद कसी कमर ढीली कर ली। नेहरु ने अपने एक भाषण में कहा कि वर्तमान पीढ़ी को सख्त मेहनत की सजा भुगतनी पड़ेगी। लेकिन गाँधी के वारिसों ने कुर्सी के विलास भोगने शुरु कर दिये। अपने आचरण से उन्होंने यह कतई साबित नहीं किया कि देश दांत भींच कर एक हिमालयी अभियान में जुटा है। इस तरह वह हवा शुरु हुई, जो आज एक तूफान का रुप ले चुकी है। भ्रष्टाचार और सारी बुराइयाँ इस कारण है कि कांग्रेस ने उस मनोवैज्ञानिक क्षण का फायदा नहीं उठाया, जो 15 अगस्त, 1947 को उपस्थित हुआ था। उस दिन कांग्रेस के नेता की यह हालत थी कि जिस ओर दो पैर बढ़ जाते, उस ओर करोड़ों पैर उत्साह से चल देते। लेकिन नेताओं के पैरों ने अपनी जिम्मेदारी नहीं समझी और आज करोड़ों पैर निर्बल और बेतरतीब ढंग से लडखड़ा रहे हैं।

भारतीय भवन, विदेशी मचान

अपनी एक मंत्रमुग्ध आमसभा में होमीदाजी ने पूछा है कि गाँधीजी का नाम लेने वाली सरकार हिन्दुस्तान में नया स्वदेशी आंदोलन शुरू क्यों नहीं करती। वे यह भी जानना चाहते हैं कि 1947 में भारत में कितनी विदेशी शराब आती थी और अब कितनी आती है। शराब का जिक्र करके दाजी ने सचमुच एक चुभता हुआ मुहावरा चुना है, जो भारतीय दिमाग को एकदम स्पर्श करता है। स्पष्ट ही उनका मतलब केवल बोतलों में बन्द विदेशी शराब से नहीं है। दरअसल पिछले 19 वर्षों के दौरान सारी विदेशी सहायता ही भारत के लिए एक जहरीली शराब सिद्ध हुई है, जिसने हमारे चरित्र को स्खलित किया है, हमारी नसों को कमजोर किया है और हमारी इच्छाशक्ति को समाप्त कर डाला है। डाक्टरी नुस्खे के रूप में शराब जिस तरह उपयोगी है, उसी तरह विदेशी सहायता भी उपयोगी है। वह तो रूस ने भी ली है और सारे योरप ने भी। मदद लेने का मकसद यह है कि मदद लेना जल्द से जल्द बंद हो जाए। जो बच्चा घुटना चल रहा हो, उसे उंगली पकड़ने का हक है। लेकिन हम तो दूसरों के कंधों पर चढ़ने के आदी हो चुके है। मुफ्त और उधार की हमें लत पड़ चुकी है। इसी स्थिति से दुखी होकर बेचारे चन्द्रशेखर व्यंकट रमण कहते हैं कि अगर हम देशी अक्ल से सामान तैयार नहीं कर सकते, तो अच्छा है कि हम गाँधीवादी युग में चले जाएं और केवल बैलगाड़ी में सफर करें। लेकिन वे राणा प्रताप अब मर गए, जो आजादी की घास को गुलामी के व्यंजनों से बेहतर समझते थे। 19 वर्षों के बाद अगर भारत आज भी आजाद है, तो इसका कारण यह है कि किसी को हमें गुलाम बनाने की फुर्सत नहीं है और आर्थिक गुलामी के कई बारीक रास्ते निकल चुके हैं।

इन्दिरा गाँधी कहती है कि भारत के मामूली लोग अपने सारे इतिहास में कभी इतने समृद्ध नहीं रहे, जितने कि वे आज हैं। सिनेमा में टिकिट के लिए लम्बे–लम्बे क्यू लगते हैं और रेस्तरां भरे रहते हैं। छुट्टी मनाने वाले सैलानी तितलियों की तरह रमणीक स्थलों पर मंडराते रहते हैं और वे सब टाटा–बिड़ला नहीं है। यह सब शायद ठीक है, लेकिन क्या यह अजीब बात नहीं है कि जिस देश पर बीसियों अरब का कर्जा हो, वहाँ मोटर कारों और स्कूटरों के लिए भीड़ उमड़ी पड़ती हो? क्या यह अजीब नहीं है कि जब देश शताब्दि के सबसे बड़े अकाल से गुजर रहा था, तब सारे होटल अन्नपूर्णा हो रहे थे और किसी ने अपने चटोरेपन को लगाम नहीं लगाई। जब द्वितीय महायुद्ध चल रहा था और ब्रिटेन में गेहूँ की कमी पड़ी, तो सचमुच डबल रोटियों के दर्शन नहीं होते थे। इसी युद्ध में जब रूस को मोटर वाहनों की कमी पड़ी, तो सारे वाहन सरकार ने ले लिये और एक भी रूसी नागरिक के पास निजी कार नहीं बची। लेकिन जब भारत–पाकिस्तान का 22 दिन का युद्ध चल रहा था, तब क्या एम्बैसेडर का मोटर कारखाना एक दिन के लिए भी बंद हुआ? हमारी सारी समृद्धि खोखली है, क्योंकि यह दौलत हमारे पुरूषार्थ से, हमारे बढ़े हुए राष्ट्रीय उत्पादन से नहीं आई है। ऐसी ऊपरी समृद्धि से क्या लाभ जो राजनैतिक सार्वभौमता को बेच कर प्राप्त की गई हो? लेकिन भारत के लोगों ने आर्थिक ब्रह्मचर्य का कोई मुद्दा नहीं बताया है। प्रजातंत्र का व्यावहारिक मतलब हमारे लिए है, विदेशी कर्ज और सस्ती समृद्धि। नेहरु से लेकर इन्दिरा गाँधी तक की सरकारें इस नीति पर चली हैं कि कम से कम कुर्बानी के

साथ ज्यादा से ज्यादा तरक्की हो। सुब्रह्मण्यम ने अकाल से बचने के लिए हजारों जहाज अमेरीका से रवाना करवा दिये। और उस अनाज को उदरस्थ करने के बाद अब हम कहते हैं कि सुब्रह्मण्यम नालायक मंत्री हैं। जी हाँ है, लेकिन अगर वे हजारों जहाज नहीं आते, तो अपना पेट काटने के लिए कौन तैयार था? था कोई?

कुर्बानी और आर्थिक ब्रह्मचर्य आज देश के वातावरण में ही नहीं है और इसका मुख्य दोष कांग्रेस के नेताओं का है, जिन्होंने 1947 के तुरन्त बाद कसी कमर ढीली कर ली। नेहरु ने अपने एक भाषण में कहा कि वर्तमान पीढ़ी को सख्त मेहनत की सजा भुगतनी पड़ेगी। लेकिन गाँधी के वारिसों ने कुर्सी के विलास भोगने शुरु कर दिये। अपने आचरण से उन्होंने यह कतई साबित नहीं किया कि देश दांत भींच कर एक हिमालयी अभियान में जुटा है। इस तरह वह हवा शुरु हुई, जो आज एक तूफान का रुप ले चुकी है। भ्रष्टाचार और सारी बुराइयाँ इस कारण है कि कांग्रेस ने उस मनोवैज्ञानिक क्षण का फायदा नहीं उठाया, जो 15 अगस्त, 1947 को उपस्थित हुआ था। उस दिन कांग्रेस के नेता की यह हालत थी कि जिस ओर दो पैर बढ़ जाते, उस ओर करोड़ों पैर उत्साह से चल देते। लेकिन नेताओं के पैरों ने अपनी जिम्मेदारी नहीं समझी और आज करोड़ों पैर निर्बल और बेतरतीब ढंग से लडखड़ा रहे हैं। एक शंख जब फूंकने का वक्त था, तब हम चिलम पीने लगे। युद्ध तो उसी दिन हारा जा चुका था, जब नेहरु के दैदीप्यमान युगमोहक व्यक्तित्व को पर्दा बनाकर कांग्रेस ने बन्दर बांटे शुरू कर दी। युद्ध तो उसी दिन हारा जा चुका था, जब नेहरु ने अपने अभूतपुर्व प्रभाव के बल पर शासन करना शुरु किया, लेकिन उसे करोड़ों हाथों की कृति में नहीं बदला। लोग नेहरू की महानता को सराहते रहे और निठल्ले बैठे रहे, जैसे चकोर चांदनी को सराहता रहता है और घोंसले में बैठा रहता है।

नेहरू के सारे राज में हमारे पंख फडफडाते रहे और लगा कि हम उडेंगे, लेकिन मुक्त आकाश में उडने का आनंद हमें कभी प्राप्त नहीं हुआ।

सस्ती समृद्धि की फिसल पट्टी पर पहले उन नेताओं ने फिसलना शुरु किया, जो पहले मोटी खादी पहनते थे और गरीब परिवारों की पर्वाह न कर जेल जाते थे। खादी वे पहनते रहे, लेकिन उनके पुत्रों के पास कस्टम चुराकर मंगाए गए ट्रांजिस्टर आने लगे। उनके पीछे सारा देश फिसलने लगा। अब जब कर्मचारी वेतन बढ़ाने की मांग करते हैं, तो नेता किस मुंह से उन्हें इंकार करें? जब अकाल पड़ता है और अन्न आन्दोलन होते हैं, तब वे किस मुंह से कहें कि जनता भले ही सत्तू खायेगी, लेकिन विदेशी गेहूँ की शर्ते नहीं सहेगी? जब पूँजीपति के मुनाफे बढ़े हैं, तो मजदूर बोनस की मांग क्यों न करें? स्पष्ट है कि यह समृद्धि का रास्ता नहीं है। समृद्धि के लिए यह जरुरी है कि मजदूर कम वेतन लें और ज्यादा घंटे काम करें (जैसे उन्होंने रुस में किया), कर्मचारियों का वेतन कम हो और बाजार में विलास के सामान की बहुतायात न हो, और हर क्षेत्र में काट कसर हो, थोड़ी अपने आप जबर्दस्ती हो। लेकिन नेता यह किस मुंह से कहें? इस काट कसर का नाम ही समाजवाद है। समाजवाद गरीबी का वाद है? और उसमें बाहरी जोर–जबर्दस्ती से काम करवाया जाता है। लेकिन हम प्रजातंत्रीय समाजवाद चाहते थे, जिसका मतलब यह है कि लोग स्वेच्छा से, राजी खुशी से, देश के लिए कुर्बानी दें। लेकिन जब नेताओं ने ही ऐच्छिक कुर्बानी का कोई उदाहरण पेश नहीं किया, तो जनता क्या खाक करेगी? दरअसल गाँधीजी के नेतृत्व में स्वाधीनता की अहिंसक लड़ाई लड़ने वाले देश के लिए यह बिलकुल स्वाभाविक था कि वह विकास के लिए प्रजातंत्रीय समाजवाद का रास्ता अपनाए। जिस तरीके से अंग्रेज हटाये गए, उस तरीके से हम आगे भी बढ़ सकते थे, लेकिन तब गाँधी जैसा जादूगर मौजूद था, जबकि आज 1966 में हमें लगता है कि गाँधी कभी हिन्दुस्तान में पैदा ही नहीं हुए।

उधार और कर्ज के बल पर कांग्रेस ने देश में एक लम्बा–चौड़ा वर्ग तैयार कर दिया, जो वर्तमान नीतियों के बल पर फलफूल रहा है। इस वर्ग को सस्ती समृद्धि की सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस तबके में शायद वे सभी लोग शामिल हैं, जो कि मुखर हैं, प्रभावशाली हैं और भारतीय राजनीति को मोड़ने का माद्दा रखते हैं। इसमें वह बुद्धिजीवी मध्यम वर्ग शामिल है, जो स्वाधीनता के आन्दोलन की रीढ़ था। सबने समझौते कर लिये हैं। भारत का प्रजातंत्र अब एक तरह से अमेरिका को ब्लैकमेल करने का तरीका बन गया है। हम धमकी देते हैं कि यदि हमें विदेशी मदद नहीं मिली तो भारत में प्रजातंत्र नहीं बचेगा, हम क्रांति की गोद में चले जाएंगे। तब अमेरिका हमारे प्रजातंत्र को डॉलर का अनुदान दे देता है। शिक्षा में इंडो–अमेरीकी फाउंडेशन का हमने घोर विरोध किया, लेकिन सच पूछा जाए, तो सारा का सारा भारतीय प्रजातंत्र एक विशाल अमरीकी फाउंडेशन है (जिसमें जर्मनी, इंग्लैण्ड, रूस और जापान की बल्लियां भी लगी है)। अमरीकी सीमेंट–कंकरीट पर भारतीय प्रजातंत्र की इमारत खड़ी हो रही है। कब यह इमारत पूरी होगी और कब हम विदेशी मचानों और खपच्चियों को गिरा कर अलग कर सकेंगे, यह भगवान ही जानता है।

❁❁

प्रस्तुति : डॉ. सरोज कुमार,
मनोरम, 37, पत्रकार कॉलोनी, इन्दौर
मो. : 094066 22290

(यह लेख 'नईदुनिया' इन्दौर में 7 अगस्त 1966 को प्रकाशित हुआ था।)

वर्तमान परिदृश्य - २ (सोशल साईट्स से...)

BER 27, 2017

TORIAL PAGE

WORDLY WISE
IT IS NOT THE PAIN AND THE WOUNDS THAT ARE THE WORST. THE WORST IS THE HUMILIATION.
— PASCAL MERCIER

I need to speak up now

The economy is on a downward spiral, is poised for a hard landing. Many in the BJP know it but do not say it out of fear

YASHWANT SINHA

> The government has asked the income tax department to chase those who have made large claims. Cash flow problems have already arisen for many companies specially in the SME sector. But this is the style of functioning of the finance ministry now. We protested against raid raj when we were in opposition. Today it has become the order of the day. Post demonetisation, the income tax department has been charged with the responsibility of investigating lakhs of cases involving the fate of millions of people. The Enforcement Directorate and the CBI have also their plates full. Instilling fear in the minds of the people is the name of the new game.

पूर्व वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने अर्थव्यवस्था की तस्वीर पेश करते हुए अंग्रेजी अखबार ''इंडियन एक्सप्रेस'' में लिखा है। इसका मुख्य आशय हिन्दी में दिया जा रहा है, जो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है –

इस लेख में उन्होंने कहा कि सरकार ने 2015 में जीडीपी की गणना करने के तरीके में बदलाव किया था, इस तरीके से गणना करने पर जीडीपी रेट में 2 प्रतिशत का अंतर आता है। उन्होंने लिखा, ''वर्तमान में हमारी जीडीपी ग्रोथ रेट 5.7 प्रतिशत है, जबकि पुराने तरीके की गणना के अनुसार यह केवल 3.7 प्रतिशत या उससे भी कम है।''

उन्होंने लिखा कि रेड (Raid) राज आजकल आम बात हो गई है। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट के पास कई केस हैं, जिनसे लाखों लोग जुड़े हैं। उन्होंने लिखा, ईडी और सीबीआई के हाथ भी खाली नहीं हैं। लोगों के मन में डर पैदा करने का खेल शुरू हो गया है। वित्तमंत्री ने अर्थव्यवस्था की हालत बेहद खराब कर दी है। अगर मैं अब भी इस बारे में न बोलूं, तो यह देश के प्रति अपने कर्तव्य से मुंह मोड़ना होगा।

उन्होंने कहा कि वह जो भी लिख रहे वह उनके साथ–साथ बीजेपी और इससे बाहर के कई ऐसे लोगों का मत है, जो डर के कारण कुछ बोल नहीं पा रहे हैं। यशवंत सिन्हा, अटल बिहारी वाजपायी की सरकार में वित्त मंत्री थे। उनके काल में ही इंडिया मिलेनियम बॉन्ड्स जैसी सफल योजना शुरू हुई थी। वह नरेंद्र मोदी सरकार की कई नीतियों की लगातार आलोचना करते रहे हैं। उनके बेटे जयंत सिन्हा पहले वित्त मंत्रालय में राज्यमंत्री थे, लेकिन अब उन्हें उड्डयन मंत्रालय दे दिया गया है। माना जाता है कि उनके यशवंत सिन्हा की आलोचनाओं के चलते ही उनका ट्रांसफर किया गया है।

सिन्हा के इस लेख में देश की अर्थव्यवस्था से ज्यादा वित्तमंत्री अरुण जेटली पर निशाना साधा है। उन्होंने लिखा, 'वित्त मंत्रालय को अपने बॉस का अनडिवाइडेड अटेंशन चाहिए होता है।' उन्होंने इशारा किया कि अरुण जेटली को अन्य कई मंत्रालयों की जिम्मेदारी भी दी गई है जो कि वित्त मंत्रालय से उनका ध्यान भटका रही है।

उन्होंने चेतावनी दी कि अर्थव्यवस्था को बनाना जितना मुश्किल है उसे बिगाड़ना उतना ही आसान है। उन्होंने लिखा, 'पीएम दावा करते हैं कि उन्होंने गरीबी को करीब से देखा है। उनके वित्त मंत्री पूरे देश को गरीबी दिखाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।'

सीए राजेन्द्र गोयल जो कि स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर एवं मध्यप्रदेश स्टॉक एक्सचेंज के पूर्व डायरेक्टर रहे हैं, उनकी राय जब हमने इस सम्बंध में जाननी चाही, तो उनका विचार है कि-

''इस बात में कोई संदेह नहीं है, कि वर्तमान सरकार की कोशिश, नियत एवं उद्देश्य महान है। इसके बावजूद आर्थिक मोर्चे पर इनकी नाकामी निम्न मुद्दों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है -

(1) वित्त एवं कराधान एक तकनीकी विषय है, जिसे कि यह सरकार 'सामान्य ज्ञान' एवं 'कठोर प्रक्रिया' के द्वारा लागू करना चाहती है।

(2) आर्थिक प्रक्रिया लचीली होती है, उसे समय एवं परिस्थितियों के अनुसार लागू किया जाना चाहिए। सामान्यतः आर्थिक सिद्धांत मौजूदा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पूर्ण तैयारी के साथ शनैः शनैः उनके परिणामों को देखते हुए लागू किए जाते हैं। वर्तमान में अर्थव्यवस्था एवं करारोपण सम्बंधी व्यवस्थाएँ थोपी हुई प्रतीत होती हैं।

(3) चूंकि अर्थ एवं कराधान तकनीकी विषय है, अतः उनसे सम्बंधित योजनाएँ बनाना एवं क्रियान्वयन का कार्य उन लोगों के द्वारा किया जाना चाहिए, जो कि अर्थव्यवस्था की समझ रखते हों, उन योजनाओं को लागू करने के परिणाम समझते हों तथा योजना लागू होने के बाद उत्पन्न कमियों को तुरंत हल करना जानते हों। वर्तमान में लागू योजनाओं में नौकरीपेशा, तानाशाही की बू आती है।

आज के माहौल में व्यवसाय निरुत्साहित हो गया है एवं आर्थिक परामर्शदाता उबाऊ प्रक्रियाओं से खिन्न है। मेरा विचार है उक्त कमियों से निपटने का एक ही रास्ता है कि, सरकार अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाए। अर्थ विशेषज्ञों की सलाह से ही आगे कदम रखे।''

सम्पर्क - मो. 9300077232